# रतनजोत की खली से बायोगैस

## एक किलो खली से 30 से 35 लीटर बायोगैस

## घरेलू कार्यों में उपयोग संभव

**कार्यालय संवाददाता**

उदयपुर, 8 मई। रतनजोत से तेल निकालने के बाद इसकी खली से दुगुनी मात्रा में बायोगैस प्राप्त करने में महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के तकनीकी एवं अभियांत्रिकी महाविद्यालय के वैज्ञानिकों ने सफलता पाई है। एक किलो खली से 30 से 35 लीटर बायोगैस बनाना संभव हो गया है। इस गैस का उपयोग घरेलू कार्यों में किया जा सकेगा। सरकार रतनजोत से बायोडीज़ल बनाने पर जोर दे रही है। कुछ सार्वजनिक उपक्रम एवं किसान रतनजोत से तेल निकाल कर उससे बायोडीजल बना रहे हैं। इस प्रक्रिया में भारी मात्रा में खली निकल रही है, जिसका उपयोग नहीं हो पाता। महाविद्यालय के नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत विभागाध्यक्ष डा. ए. के. कुरचानिया के निर्देशन में डा. दीपक शर्मा, डा. नफीसा अली एवं डा. अजय शर्मा ने रतनजोत से तेल निष्पादित करने के बाद अपशिष्ट के रूप में बची खली को बायोगैस संयंत्र में उपयोग करके दुगुनी मात्रा में बायोगैस प्राप्त करने में सफलता पाई है। इसका उपयोग संशोधित के.बी.आई.सी. बायोगैस संयंत्र में करने पर गैस उत्पादन की क्षमता दुगुनी हो जाती है। डा. कुरचानिया ने बताया कि इस प्रक्रिया का प्रयोगशाला एवं खेत पर परीक्षण किया गया। बायोगैस संयंत्र में गोबर के साथ-साथ खली को धीरे-धीरे प्रतिस्थापित करते गए और गैस की मात्रा को नापा गया। शोध में पाया गया कि गैस की उत्पादन क्षमता में खासी वृद्धि हुई है।

बायोगैस संयंत्र से निकली स्लरी में नाइट्रोजन, पोटाश एवं फास्फोरस की मात्रा अधिक पाई गई। किसानों द्वारा खेतों में इसका उपयोग करने पर फसल की अच्छी बढ़वार हुई। खेतों की उर्वरक क्षमता बढ़ने में भी यह स्लरी मददगार है।

डा. दीपक शर्मा ने बताया कि ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ती पेट्रोलियम एवं बिजली की मांग के चलते कम गोबर से भी दुगुनी मात्रा में बायोगैस प्राप्त की जा सकती है। इस गैस से ईंजन चला कर किसान अपना कार्य सम्पन्न कर सकते हैं।